# गाथा खाटू श्याम जी की | By Sunil Sarvottam

धामों में एक धाम सुना नाम है खाटू धाम
वहां विराजे श्याम हमारे जय जय जय श्री श्याम
डुबो को उबारे बाबा गिरतो को ले थाम
हारे का सहारा है वो जय जय जय श्री श्याम
जय जय जय श्री श्याम.....

प्रथम गुरूजी को वंदना द्वितीय आदि गणेश
तृतीया सिमरु शारदा मिट जाए सकल कलेश
हाथ जोड़ विनती करू सौ सौ करू प्रणाम
श्याम नाम लेकर करू पूरण सारे काम

सुनलो ध्यान लगा कर कहता हूँ श्याम कहा
कौन थे दादी दादी इनके कौन थे मात पिता
भीम थे इनके दादा और घटोत्कच पिता
हिडिम्बा इनकी दादी और मोरवी इनकी माँ
घटोत्कच के घर जन्मा मोरवी ने एक लाल
बब्बर शेर के जैसे थे उस बालक के बाल
इसीलिए उस बालक का बर्बरीक हुआ नाम
बड़ी निराली कथा है इनकी बड़े निराले काम

माँ से सीख के युद्ध चला वो बालक बन गया वीर
शिव शंकर भगवान् की उसने घोर तपस्या की
हुए प्रसन्न जो महादेव तो दिया एक वरदान
बर्बरीक को दे दिए तीन अलौकिक बाण

अग्नि देव ने भी इनको एक धनुष किया प्रदान
धनुष बाण पाकर के बढ़ गई बर्बरीक की शान
महाभारत के युद्ध की है ये एक कहानी
श्याम नाम कहता हूँ भक्तो सुनलो मेरी ज़ुबानी

कौरव और पाडवो बीच में युद्ध छिड़ा था भारी
स्वयं सारथि बने युद्ध के गिरधर कृष्ण मुरारी
बर्बरीक के मन भी इस युद्ध की इच्छा जाएगी
रणभूमि में जाने की माता से आज्ञा मांगी

माता बोलो जाओ आशीष मेरी ले जाओ
लेकिन जाने से पहले मुझे एक वचन दे जाओ
युद्ध अगर करना हो तो फिर ध्यान रहे एक बात
रंगभूमि में देना होगा हारे का ही साथ

नीले घोड़े पर वो होकर के चले सवार
जय जय खाटूवाले बाबा नीले के असवार
अन्तर्यामी भगवन जो है लीला परुषोत्तम
कृष्ण कन्हैया रास रचैया हैं वो ही सर्वोत्तम

जान लिया दिव्य दृष्टि से बर्बरीक का आना
तीन अलौकिक बानो की शक्ति को भी पहचाना
बीच राह में रोक लिया ब्राह्मण का वेश बनाकर

बर्बरीक से जान लिया सब बातों में उलझा कर

सुनके बानो की शक्ति को मन में किया विचार
अगर ये बाण चले तो होगा जग में हाहाकार
बोले भगवन सच्चे हैं जो तेरे तीनो बाण
पेड़ के सारे पत्ते भेद के दिखलाओ प्रमाण

बर्बरीक ने थाम लिया पल भर में तीर कमान
देवी देवताओ का मन में करने लगा वो ध्यान
बर्बरीक ने मन ही मन में शिव का ध्यान लगाया
एक पत्ता श्री कृष्ण ने अपने पैरो तले छुपाया

ध्यान लगाकर बर्बरीक ने जब वो बाण चलाया
पल भर में वो पेड़ के सारे पत्ते भेद के आया
पेअर तले एक पत्ता जो रह गया बाण से बच कर
बाण कृष्ण के पैरो के लगा काटने चक्कर

बर्बरीक ये बोले प्रभु अपना पैर हाथाओ
चोट न पहुंचे आप ज़रा इस पत्ते से हट जाओ
देखी बाण की शक्ति जब लीला पुरुषोत्तम ने
धर्म की रक्षा की खातिर लीला रच डाली मन में

कौरव में रण में हारेंगे उनको ये बात थी ज्ञात
बर्बरीक तो देगा देगा हारे का ही साथ
सोच विचार के बोले ब्राह्मण रुपी भगवान्
बर्बरीक से कृष्णा कन्हैया लगे मांगने दान

लीलाधर की लीला से थे बर्बरीक अनजान
वचन दिया जो मांगे आप तो दे सकता हूँ प्राण
इतना सुन भगवान् के मुख पर फैली एक मुस्कान
वचन भरा कर बर्बरीक से माँगा शीश का दान

कृष्ण की वाणी सुनकर पल भर वो हुआ अबात
मन में शंका जाएगी हो ना हो कोई है बात
हाथ जोड़ कर पूछा हे मुनिवर कौन हो आप
क्यों माँगा है शीश आपने ऐसी क्या है बात

कौन हो कहाँ से आये मुझको इतना बतलाओ
दर्शन देकर मुझको अपना शंका मेरी मिटाओ
विनती सुनकर बर्बरीक की रुप विराट दिखाया
बर्बरीक ने भगवन के चरणों में शीश झुकाया

धन्य हुआ जीवन मेरा दर्शन जो आपका पाया
रूप विराट दिखा कर मुझको जीवन सफल बनाया
वह बोले हे भगवन मैं दान अवश्य ही दूंगा
लेकिन मेरी इच्छा है िकी युद्ध भी मैं देखूंगा

कृष्ण कन्हैया ने उनकी ये बात ह्रदय से मानी
बोले महाभारत के सबसे पहले तुम हो दानी
माँ शक्ति को याद किया थमाई उसने तलवार
क्षण भर को जैसे के सारा मौन हुआ संसार

एक ही पल में धड़ से उसने अपना शीश उतारा
चरणों में रख दिया कृष्ण के अद्भुत बड़ा नज़ारा
लीलाधर ने शीश को अपने हाथों बीच उठाया
सींच दिया अमृत से उसको अमर शीश कहलाया

शीश रखा एक पर्वत पर और दिया एक वरदान
अपने ही कई नामो में से दिया उन्हें एक नाम
श्याम नाम से कलयुग में होगा तेरा गुणगान
शीश के दानी कहलाओगे खाटू होगा धाम

कार्तिक माह की एकादशी को खाटू नगरी बीच
हुई खुदाई प्रकट हुआ था सुन्दर सा एक शीश
हारे का सहारा है वो वो ही लखदातार
तीन बाणधारी है वो ही लीले का असवार

भक्ति भाव से जो भी कोई आये इनके द्वारे
हो जाते हैं उन भक्तों के पल में वारे न्यारे
दूर दूर से आते हैं जो लेकर ध्वजा निशान
उनके मन की इच्छा पूरण करते बाबा श्याम

फागुन मेला लागे खाटू में हर एक साल
दर्शन पाकर श्याम धणी के होते सभी निहाल
जिस घर बाँची जायेगी पावन श्याम कथा
उस घर से मिट जाएंगी दु:ख संताप व्यथा

कहे सुनील ये हाथ जोड़ कर सुनलो ध्यान लगाए
श्याम नाम सर्वोत्तम जग में जनम सफल हो जाए
कथा समापन करता हूँ मैं लेकर श्याम का नाम
जय जय खाटू वाले बाबा जय जय जय श्री श्याम
जय जय जय श्री श्याम.....
जय जय जय श्री श्याम.....
जय जय जय श्री श्याम.....
Transcript

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%97%e0%a4%be%e0%a4%a5%e0%a4%be-%e0%a4%96%e0%a4%be%e0%a4%9f%e0%a5%82-%e0%a4%b6%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%be%e0%a4%ae-%e0%a4%9c%e0%a5%80-%e0%a4%95%e0%a5%80-by-sunil-sarvottam/